महात्मागांधी विचारधारा का आध्यात्मिक तथा दार्शनिक पक्ष

*डॉ. हरीश चन्द्र

आध्यात्मिक विचारधारा

सत्य की महिमा :– गांधी–विचारधारा का मूलमन्त्र सत्य है। इसके अन्तर्गत गांधी विचारधारा का आध्यात्मिक तथा दार्शनिक पक्ष समाहित है। गांधी जी का संपूर्ण जीवन 'सत्य के प्रयोग से पूर्ण है'।[12] सत्य उनके लिए कल्पना मात्र नहीं, बल्कि जीवित आदर्श है। उन्होंने अपने जीवन के द्वारा यह प्रमाणित कर दिया कि सत्य सिद्धान्त नहीं आचरण का विषय भी हो सकता है। वे सत्य को ही परमेश्वर मानते है। उनकी दृष्टि में सत्य के अभाव में परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है।[13] इसे ही वे आत्मसाक्षात्कार अथवा मोक्ष मानते हैं। परन्तु इस सर्वव्यापी सत्य की अनुभूति तथा साक्षात्कार के लिए एक विशेष मनः स्थिति, निरन्तर तैयारी तथा पवित्र अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है। इस सर्वव्यापी सत्य के साक्षात्कार के लिए अहिंसा की साधना अनिवार्य है। गांधी दर्शन का यह निष्कर्ष है कि अहिंसा के बिना सत्य–दर्शन असम्भव है।

दर्शन और आध्यात्म के क्षेत्र में गांधी जी परमहंस तथा स्वामीविवेकानन्द से अत्यधिक प्रभावित थे। इन दोनों महान विभूतियों द्वारा दार्शनिक और धार्मिक क्षेत्र में सत्य को सर्वोच्च स्थान दिया जाने के कारण ही गाँधी जी के जीवन में भी सत्य ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। सत्य की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं, 'अहिंसा को मैं जितना पहचान सका हूँ, उसकी निस्बत में सत्य को अधिक पहचानता हूँ, ऐसा मेरा ख्याल है। और यदि में सत्य को छोड़ दूँ तो अहिंसा की बढ़ी उलझनों में कभी न सुलझा सकूँगा"।[14] अर्थात महात्मा गांधी के निकट सत्य सर्वोच्च कर्म है।[15] यही कारण है कि उन्होंने सत्य को अहिंसा से भी उच्च स्थान दिया है। वे स्वयं कहते है, "सत्य में सब बातों का समावेश हो जाता है। सत्य में प्रेम मिलता है। सत्य में मृदुता मिलती है। सत्य सदा स्वाबलम्बी होता है और बल तो उसके स्वभाव में ही होता है ।"[16]

उन्होंने सर्वव्यापक रूप में सत्य का साक्षात्कार किया है। उनकी दृष्टि में "सत्य की समस्त प्रवृत्तिया ब्रह्म में उसके दृढ विश्वास में उदभूत हुई है।"[17] अर्थात सत्य स्वयं ब्रहम है। 'यंग इंडिया', और हिन्दी नवजीवन में अपने एक लेख में गांधी जी ने लिखा है, 'मैं सत्य के आदेश को अहिंसा के सिद्धान्त से अधिक समझता हूँ। सत्य बिना अहिसा के प्रयोग निष्फल है। जिसने सत्य को पा लिया है उसने मानो ईश्वर को पा लिया है। सत्य की आराधना ही भक्ति है।[18] और जो सत्य को पहचानता है उसे इसी देश मुक्ति मिल जाती है।[19] वास्तव में गाँधी विचारधारा सत्य की साधना है। सत्य ही उसका लक्ष्य है, तथा सत्य की पूजा एवं आराधना के लिए वह संसार के समस्त दुःखों का आलिंगन करने को तत्पर है। वे कहते है, 'सत्य की आराधना यानी सत्य की भक्ति। और भक्ति तो सिरका सौदा ! शीश तणु साट! है, तलवार की धार के समान है। या वह 'हरिका माग' होने से उसमें कायर–डरपोक के लिए कोई स्थान नहीं है, उसमें हार जैसी कोई बात नहीं है। वह तो मर कर जीने का मंत्र है। [20] सत्य के स्वतंत्र अनुसंधान के लिए यह आवश्यक है की मनुष्य का जीवन नीतिमय हो। गांधी जी के अनुसार सत्य की अनुभूति के लिए निरन्तर अभ्यास, वेराग्य, अर्थात इंद्रिय वासनाओ के प्रति विरक्ति और सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य के संबन्ध मे

अंतरात्मा की आवाज सुनने का दावा, केवल वही कर सकता है, जिसने इस नैतिक अनुशासन का पालन किया है। उनकी दृष्टि मे ये सब यम नियम सत्य के निष्कर्ष है और उसकी अनुभूति मे सहायता करने मे ही उनका प्रयोजन है।

अहिंसा की शक्ति

गांधी–विचारधारा का मुख्य आधार सत्य और अहिंसा है। उन्होंने 'अहिंसा के परंपरागत तत्व – दर्शन का नव संस्करण किया है।[21] उनकी दृष्टि में व्यक्तिगत रूप से सत्य और अहिंसा की साधन के द्वारा मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति कर उत्कर्ष प्राप्त कर सकता है और सामूहिक रूप से इन गुणों की साधना द्वारा मनुष्य समाज में रामराज्य की स्थापना हो सकती है।[22] निःसन्देह सत्य, अहिंसा और रामराज्य की स्थापना गांधी–चिंतन के आधार स्तम्भ है। उन्होंने कहा है, 'सत्यमय होने के लिए अहिंसा ही एक मार्ग है ' अथवा 'सत्य रूपी सूर्य का सम्पूर्ण दर्शन सम्पूर्ण अहिंसा के बिना असंभव है'।[23]

गांधी जी का जीवन एक गतिशील जीवन था। उनके जीवन की प्रयोगशाला में शोधित सत्य अहिंसा , प्रेम और सेवा मे निखरा हुआ रूप प्राप्त किया था।[24] उनका जीवन दर्शन युगधर्म की समझ पर आधारित है। विधायक रूप में अहिंसा अधिकतम प्रेम का दूसरा नाम है।[25] अहिंसा एक प्रवर्ती है जो उदारता, प्रेम तथा सर्वोदय की भावना से पोषित होती है।[26] पहले अहिंसा व्यक्ति विशेष की साधना की वस्तु समझी जाती थी। समुदायिक तथा सामाजिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग तथा प्रचारन था, गांधीजी ने उसको शास्वत सिद्धान्त बनाकर सामुदायिक तथा सामाजिक उपयोग की एक गतिशील प्रेरणा–शक्ति बना दिया।

गांधीजी का उद्देश्य भारत को पश्चिमी सभ्यता के पंजे से छुड़ाकर सत्य, अहिंसा और धर्म के मार्ग पर ले जाना तथा देश मे रामराज्य की स्थापना करके सुख शान्ति की व्यवस्था करना था।[27] उनकी कार्य पद्धति के केंद्र में यह अहिंसा सूर्य की भाति प्रतिष्ठित है। इसी अहिंसा के सिद्धांत को लेकर उन्होंने नये समाज और नए विश्व की रचना का प्रयास किया था। इस सम्बन्ध में श्री कमलापति त्रिपाठी के विचार दृष्टव्य है, 'अपनी इस नयी दृष्टि को लेकर गांधी जी जगत के सांस्कृतिक आधार को बदलना चाहते है। जीवन की आधुनिक दशा को उलट देना चाहते है और हिंसा के स्थान पर अहिंसा की प्रतिष्ठा करना चाहते है'। अहम के सुखवाद और ऐहिक भोगो की लिप्ता के स्थान पर दूसरों के प्रति अपने कर्तव्यों के पालन और प्राणीमात्र के प्रति प्रेममय जीवन के चरम उत्कर्ष तथा जगत कल्याण का रहस्य देखते हैं। गांधीवाद इस प्रकार आधुनिक पशुवाद के स्थान पर मानववाद की प्रतिष्ठा करना चाहता है।[28]

अहिंसा की महत्व प्रकट करते हुए गांधीजी ने एक स्थान पर कहा हैः– 'मेरे लिए सत्य से परे कोई धर्म नहीं है और अहिंसा से बढ़कर कोई परम कर्तव्य नहीं है ..... यह कर्तव्य करते–करते ही आदमी सत्य की पूजा कर सकता है। सत्य की पूजा का कोई दूसरा साधन नहीं है, यदि मेरा कोई सिद्धान्त कहा जाय तो वह केवल इतना ही है।[29] अहिंसा एक नकारात्मक अथवा निषेधात्मक केवल सहन करने की व्यवस्था का जीवन दर्शन नहीं है विधेयात्मक रूप में इसकी शक्ति और भी विलक्षण है। क्रियात्मक रूप में अहिंसा अधिकतम जीवधारियों के प्रति अधिकतम प्रेम की भावना का जीवन दर्शन है। गांधीजी के अनुसार जिसने अपने जीवन में प्रेम और सेवा का व्रत धारण कर लिया उनके लिये प्रेम ही सबसे बडा शिक्षण है। इसी से गांधी जी ने 'वैष्णवजन तो तेने कहिऐ जे पीर पराई जाणे रे' के मूल मंत्र को अपनाया और वे अपने को वैष्णव कहा करते थे ।

वह दूसरों के विचारों के संबंध में सहिष्णु थे और अपने विचारों में उदार यही कारण था कि उनके जीवन में कभी कटुता नहीं आई उनका निष्कपट मन सदैव 'सर्वे सुखिनः संतु सर्वे संतु निरामया' की आकांक्षा किया करते थे यही

उनके दार्शनिक एवं नैतिक सिद्धांत का सुफल है। 'गीता' उपनिषदों का सार तथा भारतीय दर्शन साहित्य का श्रेष्ठ रत्न है, जिसमें अहिंसा की महिमा का गुणगान किया गया है गांधीजी पर गीता का व्यापक प्रभाव था।' [30]

यही कारण है कि वे अहिंसा सिद्धांत के लिये जीवित रहे और इसी के लिये अपने प्राणों का बलिदान दिया। उनकी सम्पूर्ण विचारधारा, उनकी गहन दृष्टि उनका तत्व–चिंतन, साधना और उनके प्रयोग सब इसी अहिंसा पर अवलंबित है। भारतीय हिन्दू धर्म में अहिंसा ऋषियों का सिद्धान्त माना गया है, किन्तु गांधीजी ने ऐसे जनसाधारण का सिद्धान्त माना। उन्होंने पहली बार जनव्यापी अन्दोलन के अवसर पर अहिंसा का प्रयोग किया और यह सिद्ध किया कि अहिंसा व्यक्तिगत साधना के लिए नहीं है, बल्कि सामूहिक कार्यों में भी उसका महत्व है।[31] अहिंसा वास्तव में शक्तिशाली और वीर का गुण है। कायरों का नहीं। गांधी जी ने कहा है , 'मेरी अहिंसा अत्यन्त क्रियाशील शक्ति है। उसमें कायरता तो क्या दुर्बलता के लिए भी स्थान नहीं है। उन्होने अहिंसा द्वारा कठोरता को जीतने का प्रयत्न किया और वे सफल हुए। ब्रिटिश–साम्राज्य की शक्ति भी उनके सामने झुक गयी । इस प्रकार उन्होंने पशुबल के समक्ष आत्मबल का शस्त्र विश्व के सामने प्रस्तुत किया। गांधी जी की दृष्टि में सत्य के बाद अहिंसा संसार की सबसे बडी शक्ति है। 'हरिजन सेवक' के एक अंक में वे लिखते है :– 'अहिंसा एक ऐसी शक्ति है जिसका सहारा बालक, युवा, वृध, स्त्री, पुरुष सब ले सकते है, बशर्ते की उनकी इस करुणामय में तथा मनुष्य–भाव में सजीव श्रद्धा हो। जब हम अहिंसा को अपना जीवन सिद्धांत बना ले तब वह हमारे सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त होनी चाहिये।[33]

वे अपनी पुस्तक 'आदर्श भारत की रूपरेखा' में लिखते हैः यदि भारत अहिंसात्मक उपायों द्वारा अपनी स्वतन्त्रता फिर प्राप्त कर लेता है तो स्वतन्त्रता हेतु संघर्ष करने वाले अन्य देशों के लिए संदेशवाहक कर्ता होगा। पर इससे भी अधिक महत्व की बात यह है कि विश्व शाति के एक नूतन और अभूतपूर्ण मार्ग का उदघाटन करने में सहायक होगा। [34] इस प्रकार कहा जा सकता है कि अहिंसा के द्वारा उन्होंने समाज तथा राजनीति में परिवर्तन करने का साहस किया और उसे विश्व–कल्याण के लिए उपयोगी बताया।[35] गांधीजी का आग्रह था कि अहिंसा को संगठित करके उसके द्वारा बडी–बडी राजनैतिक तथा सामाजिक समस्याओं का हल किया जाए।

***सह–आचार्य**
हिन्दी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय
कोटपूतली, जयपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. बापू और मानवता – कमलापति त्रिपाठी
2. गांधी साहित्य भाग 5 – धर्मनीति
3. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा – गांधी
4. गांधी साहित्य भाग 5 – पृष्ठ 117
5. आत्मकथा – गांधी
6. अथिकल रिलीजन – गांधी

7. यंग इंडिया तथा हिन्दी नवजीवन
8. गांधीवाद की रूपरेखा – रामनाथ सुमन
9. मंगल प्रभात गांधी
10. सर्वोदय तत्वदर्शन – गोपीनाथ धावन
11. अहिंसा दर्शन– बलभद्र जैन
12. आत्मकथा (गुजराती संस्करण)
13. सत्याग्रह मीमांसा – रंगनाथ दिवाकर
14. बुद्ध और अहिंसा – महात्मा गांधी